Aparajitha

सफलता के बीज

त्रैमासिक सूचना-पत्र

अप्रैल - जून 2019

जागरुकता से परिवर्तन

30

अंक

केवल निजी संचरण के लिए

विषय-सूची

नमस्ते! 2

एक करोड़ विद्यार्थी और अभी यह सफर जारी है 3

हिमाचल प्रदेश में *TTT*. 4

उन्होंने सीखा; तो मैंने किया 5

जीवन में उत्कृष्टता के लिए जीवन कौशल शिक्षा 6

Vएक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक - मशाल आगे बढ़ रही है 7

गूँज! 8

अपराजिथा फाउंडेशन्स
5A, वी.पी.रथिनासामी रोड
बीबीकुलम
मदुरई- 625002.

0452-4375252

info@aparajitha.org

नमस्ते!

धरती से उत्पन्न होने वाला जल उसके आस-पास के जीवन को भी लाभ पहुँचाता है। यही जल जब एक धारा, झरने, उपनदी या नदी का रूप लेता है, तो उससे और भी कई जीवन लाभ ले पाते हैं। इसी तरह, 'थलिर थिरन थिट्टम' भी एक छोटे-से प्रयास के रूप में शुरू हुआ था जिसका लाभ केवल कुछ छात्र उठा रहे थे। अब वही प्रयास एक करोड़ से ज़्यादा विद्यार्थियों के जीवन को छू चुका है। इस अंक के पहले भाग में इस गौरवपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण सफर को संक्षेप में बताया गया था। वह सफर जो दक्षिण भारत से शुरू हुआ था अब उत्तर में हिमालय की गोद तक पहुँच गया है। दूसरे भाग में TTT के नवीनतम गंतव्य के बारे में जानकारी दी गई है।

सीखना द्विपक्षीय प्रक्रिया है। अंक के तीसरे भाग में एक स्वयं-सेवक ने अपने इस व्यक्तिगत अनुभव का वर्णन किया है। अगले दो भागों में बताया गया है कि किस तरह से दो अलग संस्थाएँ अपने स्थानों में सुधार लेन हेतु TTT का प्रयोग कर रही हैं।

ये भी पढ़ें . . .
अपने विचार, अनुभव और भावनाएँ हमारे साथ साझा करें . . .
अपने मित्रों और सम्बन्धियों को इस बारे में बताएँ . . .

आपके निरंतर सुझावों और सहायता की अपेक्षा में

संपादकीय टीम

टिम टिम तारे, कक्षा *7* से *12* के विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षण प्रदान करता है। डबल्यूएचओ *(WHO)* द्वारा दिए गए दस कौशलों की सूची के आधार पर बनाए गए ये पाठ विद्यार्थियों को सुखद आनुभविक शिक्षा प्रदान करते हैं। प्राथमिक स्तर पर ये पाठ शिक्षकों की पुस्तिका के आधार पर और माध्यमिक व उच्च स्तर पर विडियो द्वारा करवाए जाते हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है विद्यार्थियों को ज़िम्मेदार नागरिक बनाना और *2008-2009* के दौरान इसे *5* उच्च माध्यमिक स्कूलों में प्रारंभ किया गया था। *2009-10* में इसे तमिलनाडु सरकार द्वारा, तमिल नाडु के सभी माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूलों में लागू किया गया। इसके पश्चात, ये प्राथमिक स्कूलों, सरकार की सहायता से चलने वाले निजी स्कूलों और इस कार्यक्रम में रुचि दिखाने वाले आन्य स्कूलों में लागू किया गया। अब यह कार्यक्रम6राज्यों में कार्यान्वित है- तमिल नाडु, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और हरियाणा।

एक करोड़ विद्यार्थी और अभी यह सफर जारी है . . .

“थलिर थिरन थिट्टम” यानि “टिम टिम तारे” का सफर, शैक्षणिक वर्ष 2008-09 में तमिल नाडू के पाँच स्कूलों के 465 विद्यार्थियों को जीवन कौशल की शिक्षा देने के साथ आरम्भ हुआ। इसका उद्देश्य था जागरुकता बढ़ाकर परिवर्तन लाना। विद्यार्थियों पर इसका सकारात्मक प्रभाव देखकर, श्रीमान दिमंत और सुश्री देवांशी ने TTT को गुजरात पहुँचाने में हमारी सहायता की। TTT का गुजराती रूप –”टिम टिम तारा”, शैक्षणिक वर्ष 2012-13 में केवल 100 स्कूलों में लागू किया गया था। इसके बाद, राजस्थान सरकार के शिक्षा मंत्रालय की मदद से टिम टिम तारे को, शेषणिक वर्ष 2017-18 से राज्य के 1411 स्कूलों में लागू किया गया। इसी वर्ष में इंदौर के ज़ोनल कमिशनर की सहयोग से, TTT को इंदौर (मध्य प्रदेश) के 200 स्कूलों में सम्मिलित किया गया साथ ही उत्तर प्रदेश के 50 स्कूलों में भी TTT आरम्भ हुआ। हरियाणा में भी राज्य शिक्षा विभाग ने TTT को 244 स्कूलों में आरम्भ करने की पहल की।

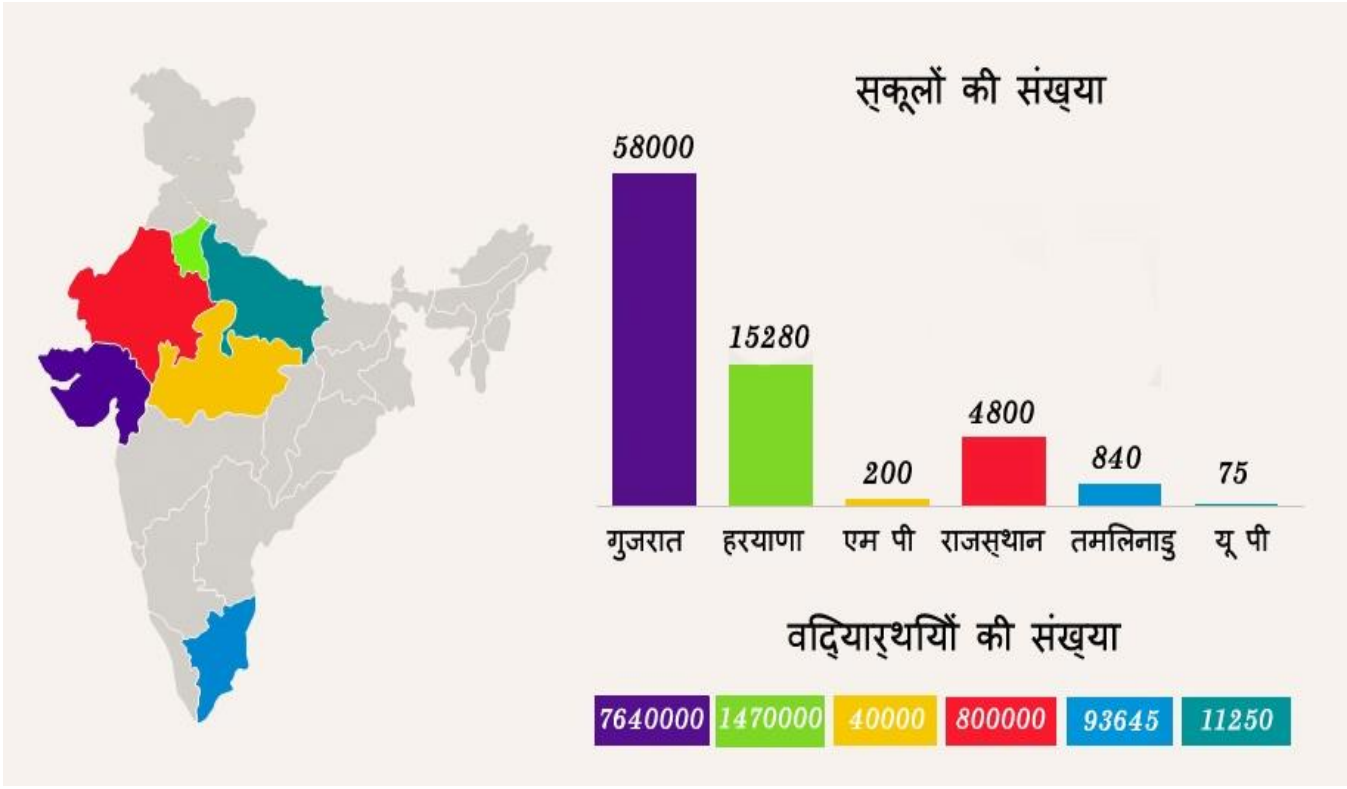

20 जनवरी 2018 को, टिम टिम तारे, पहली बार सेटेलाइट तकनीक द्वारा हरियाणा में सीधा प्रसारित किया गया। इसके परिणामस्वरूप, 10,000 स्कूलों में पढ़ रहे 2,50,000 विद्यार्थियों ने जीवन कौशल की शिक्षा प्राप्त की। इस सफल प्रयास के बाद, वर्ष 2018-19 में, गुजरात व हरियाणा में पूरे वर्ष EDUSAT द्वारा सीधा प्रसारण किया गया। 73,280 स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे 91,10,000 विद्यार्थियों ने इसका लाभ उठाया। इसी समय में, तमिल नाडू, राजस्थान. मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के 5915 स्कूलों में 9,44,895 विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के माध्यम से TTT द्वारा जीवन कौशल शिक्षा प्राप्त की। इसका सार यह है कि, शैक्षणिक वर्ष 2018-19 में, **6** अलग राज्यों के **73280** स्कूलों में, **1,00,54,895** विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा का लाभ मिला। आगामी वर्षों में TTT को कई और राज्यों में पहुँचाया जाएगा और करोड़ों विद्यार्थी इसका लाभ उठा पाएँगे।

- टी. ए. पद्मनाभन

हिमाचल प्रदेश में TTT

गुजरात, राजस्थान, तमिल नाडु, मध्य प्रदेश और हरियाणा के पद्चिह्नों पर चलते हुए, अब TTT का जीवन कौशल कार्यक्रम, हिमाचल प्रदेश में भी शैक्षणिक वर्ष 2019-20 से शुरू हो रहा है। 5 मार्च 2019 को हिमाचल प्रदेश की सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए, श्रीमान आशीष कोहली (H.A.S), प्रोजेक्ट निर्देशक, इंटीग्रेटेड स्कीम ऑन स्कूल एज्यूकेशन, ने अपराजिथा फाउंडेशन के श्री टी.ए.पद्मनाभन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के अनुसार TTT का हिन्दी रूप, टिम टिम तारे, अलग-अलग चरणों में कक्षा 1 से 12 के 10,000 स्कूलों में चलाया जाएगा। वर्ष 2019-20 में पहले चरण में यह 2500 स्कूलों में लागू होगा। हर सप्ताह, एक घंटे के लिए, कक्षा 6-12 में यह कार्यक्रम चलेगा।

कार्यक्रम को असरदार बनाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। राज्य स्तर पर 8 मार्च 2019 को, शिमला में शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण में प्रादेशिक संसाधन केंद्र और शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं से 55 शिक्षकों ने भाग लिया। हिमाचल प्रदेश में टिम टिम तारे की प्रोजेक्ट मैनेजर, सुश्री रूनम कौशिक ने यह प्रशिक्षण दिया।

- रूनम कौशिक

उन्होंने सीखा; तो मैंने किया

मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी के किनारे स्थित महेश्वर, एक ऐतिहासिक नगरी है। यह अपने घाट और किलों के लिए प्रसिद्ध है। सर्दी की छुट्टियों में, मैं अपने माता-मिता से मिलने महेश्वर गई थी। विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने और उन्हें सलाह देने में मुझे पहले से ही रूचि रही है और इस बात को ध्यान में रखते हुए मेरे पिता ने आग्रह किया कि मैं बालिकाओं के उच्च विद्यालय के प्रधानाचार्य से भेंट करूँ। वहाँ के प्रधानाचार्य और शिक्षकों से बातचीत के दौरान यह सामने आया की छात्रावास में रहने वाली लड़कियाँ अपने खाली समय को व्यर्थ गँवा देती हैं और हर समय गप्पें ही मारती रहती हैं। इसको ध्यान में रखते हुए हमने यह तय किया कि उन्हें समय के प्रबंधन और लक्ष्य बनाने के बारे में प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे अपने समय का सदुपयोग कर सकें। 3 और 8 जनवरी 2019 को कक्षा 9-12 की करीब 70 किशोर बालिकाओं को यह प्रशिक्षण दिया गया, जो कि टिम टिम तारे के सत्रों पर आधारित था। दोनों ही सत्र विद्यार्थियों को बहुत पसंद आए और उन्होंने बहुत ही अच्छे तरीके से उनका सार भी बताया। कई बालिकाएँ सत्र के बाद भी मुझ से बातें कर रही थीं और यह चाहती थीं कि मैं नियमित रूप से उनके मार्गदर्शन के लिए आऊँ। उनका प्यार देखकर मैं द्रवित हो गई।

एक स्व्यं सेवक के तौर पर इस अनुभव से मुझे संतुष्टि प्राप्त हुई। मैं उन लोगों के लिए कुछ कर पाई जिन्हें कुछ नया सीखने के ज़्यादा अवसर नहीं मिल पाते हैं। अपना ज्ञान या कौशल दूसरों के साथ बाँटना और अपना समय इस तरह के अच्छे कामों में लगाना, इससे एक अलग ही प्रकार के सुख की अनुभूति होती है। हमें ऐसे लोगों से मिलने का मौका मिलता है जिनका जीवन हमारे आराम भरे शहरी जीवन से बिल्कुल अलग होता है।

इस अनुभव से मुझे यह आभास हुआ कि इस तरह के काम में अपना समय देना कोई एक-तरफा प्रक्रिया नहीं है। इससे केवल उन विद्यार्थियों को फायदा नहीं हो रहा है, जिन्हें मैं प्रशिक्षण दे रही हूँ। इस प्रक्रिया के दो रुख हैं। इससे मैं भी बहुत कुछ सीख रही हूँ। जहाँ पर विद्यार्थी समय के सदुपयोग के बारे में सीख रहे हैं, वहीं मैं यह सीख रही हूँ कि हमें दूसरों की परवाह करनी चाहिए, अपना ज्ञान साझा करना चाहिए और हमारे पास जो है उसके लिए कृतज्ञ होना चाहिए।

- प्रीति पुरोहित
नॉएडा

जीवन में उत्कृष्टता के लिए जीवन कौशल शिक्षा

एक विश्व स्तरीय अध्ययन से यह सामने आया है कि अपने कौशलों को सुधारने के लिए, उत्कृष्ट कार्य करने के लिए और अपने व्यवसाय में आगे बढ़ने के लिए, हमें वे कौशल सीखने चाहिए जो स्कूल और कॉलेज में नहीं सिखाए जाते। ये महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल होते हैं। जीवन कौशलों के माध्यम से हम अपने निजी और व्यवसायिक जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त कर पाते हैं।

इसी उद्देश्य से ओलिरुम एरोडु फाउंडेशन ने वर्ष 2015 में प्रायोगिक तौर पर,एरोड कोर्पोरेशन माध्यमिक स्कूल, पेरियावासलु में, थलिर थिरन थिट्टम कार्यक्रम आरम्भ किया। इसके फलस्वरूप उन्हें 9-13 वर्ष के विद्यार्थियों में एक सकारात्मक परिवर्तन नज़र आया। यह परिवर्तन खास तौर पर क्रमशः इन क्षेत्रों में देखा गया – समय का सदुपयोग, अंतर्वैयक्तिक रिश्ते, दूसरे लिंग के लोगों का आदर, मन लगाकर सीखना इत्यादि। इस परिणाम से प्रभावित होकर यह कार्यक्रम कोर्पोरेशन के सभी 42 स्कूलों में और एरोड जिले के 50 से भी अधिक माध्यमिक और उच्च विद्यालयों में चलाया गया। अब तक 5300 विद्यार्थी इसका लाभ उठा चुके हैं। 120 से भी अधिक शिक्षकों को यह कार्यक्रम चलाने का प्रशिक्षण दिया गया है। शिक्षक बताते हैं कि इस कार्यक्रम को लागू करने के बाद उन्होंने जीवन कौशल का महत्त्व समझ लिया है और उन्हें इसमें हिस्सा लेकर बहुत ही अच्छा लगता है।

विश्व के अधिकतर युवा भारत में रहते हैं। अगर हम उनके जीवन कौशलों को सुधार दें, तो निश्चय ही बड़े स्तर पर गुणवत्ता में सुधार आएगा। इसी उद्देशय से हमारी संस्था ने, अपराजिथा फाउंडेशन के साथ मिलकर जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करने का बीड़ा उठाया है।

- आर. रिजो
प्रोजेक्ट एग्ज़ेक्युटिव
ओलिरुम एरोडु फाउंडेशन, एरोड

एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक - मशाल आगे बढ़ रही है

सेंटर फॉर सस्टेनेबल रुरल डेवेलपमेन्ट एन्ड रिसर्च स्टडीज़, वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेकनोलोजी (VIT)का एक हिस्सा है। यह केंद्र अर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के बच्चों, युवाओं, महिलाओं और किसानों के साथ काम करता है। चिरस्थायी ग्रामीण विकास इनका उद्देश्य है। इस पहल के तहत, इस केंद्र में वर्ष 2018-19 में "थलिर थिरन थिट्टम" कार्यक्रम शुरू हुआ। इसके द्वारा एन.के.एम उच्च विद्यालय और ई.वी.आर नागम्मई कोर्पोरेशन, बालिका उच्च विद्यालय वेल्लोर के विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा दी गई। विद्यार्थियों और शिक्षकों की सराहना मिलने के बाद इसे 5 और स्कूलों में शुरू किया गया। इसके बाद VIT ने कुछ विद्यार्थियों को चुना, जो बारहवीं की परीक्षा में जिला स्तर पर अच्छे अंक लाए थे और अब वहीं पर इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों को जीवन कौशल शिक्षा दी गई। बाद में इन्ही विद्यार्थियों ने स्वयं सेवक के तौर पर 7 स्कूलों के बच्चों को यह शिक्षा दी।

केंद्र के प्रोफेसर, डॉ. सी.आर.सौंदरराजन ने बताया है, कि वर्ष 2019-20 में यह कार्यक्रम 25 अन्य स्कूलों में शुरू किया जाएगा।

- एम. सेंथिल कुमार

गूँज!

"अपराजिथा जीवन कौशल शिक्षा" पत्रिका के 29वें अंक में बहुत ही बेहतरीन ढंग से बताया गया था कि 5 राज्यों में यह कार्यक्रम किस तरह चल रहा है। इस कार्यक्रम के प्रभाव को जानने के लिए दक्षिणी तमिल नाडू में जो अध्ययन हुआ था, वह इसकी सफलता का प्रमाण है। मैं प्रबंधकों और प्रशिक्षकों के प्रयासों की सराहना करता हूँ। कई और सफलताएँ प्राप्त करने के लिए मेरी शुभकामनाएँ, बधाई और धन्यवाद।

- प्रो. आर. राजा गोविंदस्वामी
निर्देशक, मन्नार थिरुमल्लई नकिकर कॉलेज, मदुरई

बधाइयाँ! स्कूल के टाइम टेबल में एक जगह बना लेना वास्तव में एक महान उपलब्धी है। नई टेकनोलोजी और टीम के प्रयासों से हम कई नव युवकों और युवतियों को सही दिशा दिखा पा रहे हैं।

- देवांशी शाह
ब्राइट साइड काउंसेलिंग
सिंगापुर

बहुत बढ़िया कार्य है। मेरी यही शुभेच्छा है कि यह कार्यक्रम हमारे देश के लाखों, करोड़ों बच्चों तक पहुँचे। सभी को मेरी बधाई।

- आर. कृष्णमूर्ति
मदुरई-625020

यह जानकार खुशी हुई कि आपके 'मूल्यांकन' से बहुत अच्छे नतीजे मिले। आपको इसी तरह और भी सफलताएँ मिलती रहें।

- डॉ. एस. राधाकृष्ण
हैदराबाद

मुझे इस बात की खुशी है कि मैं भी इस कार्यक्रम में कुछ योगदान दे पाया। पूरे देश में इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए आपके पास बहुत अच्छे लोग हैं। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

- जे. राजसेकरन
संगीतकार, मदुरई

इस कार्यक्रम की सफलता और पहुँच को देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई।

- के. वरदन
मुख्य कंसलटेशन ऑफिसर, अपराजिथा कोर्पोरेट सर्विसिस (प्रा) लिमिटेड
मदुरई

ज़्यादातर स्कूलों में जीवन कौशल शिक्षा नहीं दी जाती और मैं सच्चे मन से जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करने वाले लोगों की सराहना करता हूँ। हरियाणा सरकार से मान्यता प्राप्त करने के लिए मैं पूरी टीम को बधाई देता हूँ। आशा है कि यह कार्यक्रम जल्द ही पूरे देश में चलने लगेगा। अपने सफल कार्यों को आगे बढ़ाते रहिए।

- देवरायन एस
असोसियेट बिज़नेस मैनेजर, अपराजिथा कोर्पोरेट सर्विसिस (प्रा) लिमिटेड
बेंगलुरू